B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper V
Topic - ईश्वर के अस्तित्व के संबंध में विश्व-सम्बन्धि युक्ति
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के क्रम में विश्वसम्बन्धि युक्ति या Cosmological Argument भी एक है। Cosmos शब्द का अर्थ होता है- 'संसार' या विश्व। इसलिए इस 'विश्व' की व्याख्या करने के लिए यह युक्ति ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करती है। जब हमलोग इस युक्ति पर ध्यान देते है तो हमें यह मालुम होता है कि इस युक्ति के दो रूप है। (1) विश्व की आकास्मिकता पर ~~आ~~ आधारित होगा (2) कार्य-कारण नियम पर आधारित होगा। प्रो० केयर्ड ने कहा है — "विश्व आकस्मिक है अथवा हमारी तात्कालिक अनुभूति विषयक विश्व आकास्मिक है, इसलिए एक सर्वथा आवश्यक प्राणी की सत्ता है।" थामस एक्विनस ने कहा है कि जब हमलोग विश्व की बस्तुओं का विश्लेषण करते हैं तो उन्हे आकस्मिक (Contingent) पाते है। आकस्मिक बस्तु के संबन्ध मे कहा गया है कि आकस्मिक बस्तु वह है जो हमेशा कायम नहीं रहता हो और जिसका अस्तित्व स्वतंत्र नहीं रहता हो। अब यदि संसार की प्रत्येक बस्तु आकस्मिक है तब ऐसी स्थिति मे एक-एक करके उन्हे समाप्त हो जाना चाहिए था और अंत मे शून्य की स्थिति हो जानी चाहिए थी परन्तु यह सत्य नहीं है क्योंकि हम कुछ बस्तुओं का अस्तित्व देखते हैं। अब यहाँ प्रश्न उठता है कि

आकस्मिक वस्तुओं को अभी तक बने रहने का कारण क्या है? एक्विनस का कहना है कि कोई ऐसी सत्ता है जो इन विषयों को धारण करती है और इन्हें कायम रखने मे सक्षम सिद्ध होती है। इसी अनिवार्य सत्ता को ईश्वर कहा गया है जो इस आकस्मिक जगत का आधार है जो स्वयं स्वतंत्र, स्वयंभू एवं आवश्यक है। प्रसिद्ध दार्शनिक लाइबनीज ने इस युक्ति का समर्थन करते हुए कहा है कि विश्व की प्रत्येक वस्तु आकस्मिक है क्योंकि हम इसका अनस्तित्व सोच सकते है। इसीतरह सम्पूर्ण विश्व का अनस्तित्व सोच सकते है, इसलिए विश्व भी आकस्मिक है। सभी आकस्मिक सत्य का पर्याप्त हेतु रहना चाहिए। अतः यह कहा जा सकता है कि समस्त विश्व का पर्याप्त हेतु ईश्वर है।

इस युक्ति का दूसरा प्रकार कार्य-कारण युक्ति है। इस युक्ति मे बतलाया गया है कि संसार एक कार्य है इसलिए इसका कोई न कोई कारण अवश्य होगा। इस विश्व का कारण बतलाने के क्रम मे एक श्रृंखला बन जाती है इसलिए इस श्रृंखला का अंत होना आवश्यक है नहीं तो 'अनावस्था दोष' उत्पन्न हो जायेगा। इस 'अनावस्था दोष' से बचने के लिए

एक ऐसे कारण को मानना पड़ता है जो स्वयं अकारण है जिसे ईश्वर कहते हैं। प्रो० फिलन्ट ने इस युक्ति का समर्थन किया है। ~~देकार्त~~ देकार्त ने भी अपने ढंग से इस युक्ति को बतलाया है। देकार्त का कहना है कि जहाँतक हमारी सृष्टि का प्रश्न है मैं खुद अपना सृष्टिकर्त्ता नहीं हो सकता। यदि यह कहा जाये कि हमारी सृष्टिकर्त्ता हमारे माता-पिता है तो फिर यह प्रश्न उठता है कि माता-पिता के सृष्टिकर्त्ता कौन है? इसी प्रकार यह कहा जाता है कि माता-पिता के सृष्टिकर्त्ता उनके माता-पिता है। इसप्रकार हम यह देखते है कि एक सोपानक्रम बनता जाता है। लेकिन इस सोपानक्रम को कहीं न कहीं रुकना होगा क्योंकि ऐसा ~~होने~~ नहीं होने से अनावस्था दोष उत्पन्न होगा। इसलिए देकार्त ने कहा कि अंतिम कारण ईश्वर को मानलिया जाता है।

आलोचना :- जर्मन दार्शनिक कान्ट का कहना है कि विश्व सम्बन्धि युक्ति कार्य-कारण नियम पर आधारित है परन्तु कार्य-कारण की भावना हमारी बुद्धि का एक विकल्प है। कान्ट ने बतलाया कि बुद्धि के इस विकल्प को ईश्वर पर लागू नहीं किया जा सकता है क्योंकि कार्य-कारण नियम केवल सांसारिक वस्तुओं पर लागू होता है। चूंकि ईश्वर अनुभव से परे है

इसलिए यह तर्क असान्य है। इस युक्ति की आलोचना करते हुए रसेल ने कहा है कि यह युक्ति केवल अनावस्था दोष से बचने के लिए ईश्वर को मान लेना है। रसेल का कहना है कि जिसप्रकार गणित में 1 का आधा $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{2}$ का आधा $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{4}$ का आधा $\frac{1}{8}$, $\frac{1}{8}$ का आधा $\frac{1}{16}$, $\frac{1}{16}$ का आधा $\frac{1}{32}$ होता है और यह क्रम चलता रहता है, उसी प्रकार कार्य-कारण नियम को अनन्त मान लें तो इसमें क्या कठिनाई है। अतः रसेल ने कहा कि कार्य-कारण की शृंखला से बचने के लिए ईश्वर की सत्ता को मान लेना ~~असंगत~~ असंगत है।

विश्व सम्बन्धि युक्ति विश्व को आकस्मिक मानता है और उसका कारण ईश्वर को मानता है जो एक आवश्यक सत्ता है। यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि क्या आवश्यक सत्ता से आकस्मिक सत्ता का प्रादुर्भाव हो सकता है। इसलिए यह युक्ति तर्कहीन एवं असान्य है।

इस युक्ति की आलोचना करते हुए अनुभववादी ह्यूम ने कहा है कि चूँकि कार्य-कारण नियम का ज्ञान अनुभव से नहीं होता है इसलिए इसपर आधारित ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण भी उचित नहीं है।